प्रातः क्लास ओमशान्ति पिताश्री 11-10-67

रिकार्डः- आखिर वह दिन आया आजः- ओमशान्ति । मीठे2 रूहानी बच्चों ने यह गीत सुना। भूल गाते हैं जिस दिन के थे मुहताज, याद करते थे। वास्तव में कोई भी पता नहीं कि बाबा कब आये और हमको सदगति देंगे। कौन सा बाप आवेगा? कौन सी सदगति देंगे। मुहताज हैं जरूर परन्तु यह नहीं जानते कि सिरताज कैसे बनेंगे। सिरताज बनेंगे यह भी किसको पता नहीं। गीत तो ठीक है परन्तु अर्थ नहीं समझते। गीता भी करीब है, बाप ने राजयोग सिखाया है। मुहताज से सिरताज बनाया है। परन्तु मनुष्य उनको जानते नहीं। तुम भी नहीं जानते थे। जब सत बाप का संग होता है तब मालूम पड़ता है। बाप बतलाते हैं तुम जो सिरताज थे अब मुहताज बन गये हो। यह बात कोई की बुधि में नहीं होगी। तुमको भी मालूम नहीं था कि सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। देवताओं का राज्य कहा गया कुछ भी जानते नहीं। अब बाप ने यह गुह्य राज़ समझाई है। कोई मनुष्य समझाये न सके। वह तो बाप को ही नहीं जानते। भल शिव की पूजा करते हैं। शिव काशी नाथ-ग्रामी हैं। कहते हैं शिव वहाँ वास करता था। अब तुम बच्चे जानते हो शिव बाबा इस शरीर में वास करते हैं। आगे तुम कुछ नहीं जानते थे। अब बाप पढ़ाते हैं, तुम्हों में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार समझते हैं। याद की यात्रा में रहते हो और दैवी गुणों का पुरूषार्थ कर रहे हो। यह सिध होता है गरीब निवाज बाप ही इस मुहताज भारत को फिर से सिरताज बनाते हैं। तुम जानते हो ईश्वर हमको राजयोग सिखाये रहे हैं। हम तो योगेश्वरी भी हैं, ज्ञानेश्वरी भी हैं। ईश्वर हमको योग सिखाये रहे हैं। ईश्वर ही सिखलाते हैं मेरे साथ योग कैसे लगाओ। अभी तुम्हारा ईश्वर के साथ योग है। और जो भी हैं वह योग सिखलाते हैं ब्रह्म अथवा तत्व के साथ। तुम्हारी आत्मा समझती है अभी हमारा बाबा के साथ बुधि का योग है। अर्थात उनकी ही याद है। तुम हो गये हो योगेश्वरी, ज्ञानेश्वरी भी हो। ईश्वर तुमको योग सिखाते हैं। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चे तुम आत्माओं से योग सिखाता हूँ। मुझे ईश्वर कहते हैं। मैं तुम्हारा बाप हूँ। आत्मा तो है निराकार। शरीर के उपर ही भिन्न2 नाम पड़ता है। आत्मा को तो वही नाम होता है। उनका फिर यह वन्डर है। उनको शरीर तो है नहीं। उनकी आत्मा का ही नाम है शिव। उनको कहा जाता है परम आत्मा। ऊंच ते ऊंच आत्मा। और सभी का नाम है शालीग्राम। उनका नाम है शिव। जिसको रूद्र भी कहते हैं। वह फिर शिव और शालिग्राम मिट्टी का बनाये उनको बैठ पूजा करते हैं। तुम तो चैतन्य आत्मा हो। अपन को आत्मा समझो। हम आत्मा का योग बाबा के साथ है। हम योगेश्वरी, ज्ञानेश्वरी हैं। हम फिर राज-राजेश्वरी बनेंगे। ईश्वर राजाओं का राजा बनाते हैं। योग भी बाप सिखलाते हैं। ज्ञान भी बाप देते हैं। राजाओं का राजा भी ईश्वर ही बनाये सकते हैं। अब तुम बच्चे जानते हो हम अपने गवर्मेन्ट स्थापन कर रहे हैं। गवर्मेन्ट का हेड कौन है? परम पिता परमात्मा। गीता में दिखाया है कृष्ण भगवानुवाच। तो वह हेड हो गया। परन्तु नहीं। तुम्हारी पाण्डव गवर्मेन्ट गाई हुई है। पाण्डव गवर्मेन्ट और कौरव गवर्मेन्ट राज्य दोनो को नहीं है। तुम्हारा स्टैम्प भी बना हुआ है। त्रिमूर्ति का। त्रिमूर्ति का तो सब को मालूम है। मनुष्य तो विचारे बिलकुल ही इडियट्स हैं। कुछ नहीं जानते। तुम भी नहीं जानते थे। अभी समझाया है। त्रिमूर्ति के उपर है शिव। वह ही ज्ञान का सागर पतित पावन है। राजाओं का राजा भी बनाने वाला है। उनका स्टैम्प जरूर होना चाहिए। सतयुग का स्टैम्प तो फिर और होगा। वह तो जो राज्य करेंगे उनका स्टैम्प बनावेंगे। जैसे एडवर्ड फर्स्ट उनका स्टैम्प। फिर एडवर्ड सेकन्ड आवेगा तो उनका स्टैम्प बनावेंगे। वहाँ जो भी राजा बैठेगा उनका स्टैम्प बनावेंगे। तुम्हारी भी स्टैम्प जरूर होनी चाहिए। बाबा कोशिश कराते रहते हैं। इसमें डरने की कोई बात नहीं। कुछ भी पत्थर मारेंगे तो बात खिलेंगी। केस आद होगा। ऐसे नहीं कि तुमको जेल में डाल देंगे। डरो मत। बाप समझाते हैं तुम अपनी स्टैम्प बनाओ। तुम हो पाण्डव गवर्मेन्ट। तो तुम बच्चों को नशा चढ़ेगा हमारा भी स्टैम्प है। शिव बाबा का स्टैम्प चाहिए ना। जिस पर तुम समझाये सकते हो। उनको याद करने से तुम यह बनेंगे। अभी तो तुम ब्रह्माकुमार, कुमारियाँ ढेर हुये हो। बाबा ने यह भी समझाया है प्रजापिता अक्षर जरूर लिखना है। बाबा डायरेक्शन देते हैं परन्तु उस पर अटेन्शन नहीं देते हैं। अच्छे2 बच्चे भी

भाय वार कर देती हैं।नहीं तो यह स्टैम्प बनाना तो 7 दिन का काम हैं।बहुत पास होतो हैं।गवर्मेंट से पास कराये लेते हैं हम लाख स्टैम्पस बनवाने चाहते हैं।पैसा दे दो।झट सर्टिफिकेट दे देते हैं।गवर्मेंट को भी तो कोई एक स्टैम्प हैं नहीं। कब किसका कब किसका बनाते रहते हैं।तुम कहेंगे हम अपना स्टैम्पस लगाते हैं।पास तो कराना पड़ता हैं।झट अलाउ करेंगे।स्टैम्पस देख कर तुमको भी नशा चढ़ना चाहिए।दिन प्रति दिन समझाने की युक्तियां रचते जाते हैं।आखिरीन तो तुम प्रत्यक्ष होंगे ना।ऐसे गुप्त थोड़े ही रहेंगे। वन्देमातरम सभी कहेंगे।धरती को तो वन्देमातरम नहीं कहा जाता।नाम भी गायन हैं भारत की माताएं, हिन्दुस्तान की माताएं कहना शोभता नहीं।परंतु यह भी राय कौन दे।बाप कहते हैं मैं इस समय सब को राय देने आया हूं।तुम स्टैम्पस से अच्छी रीत समझा सकते हो।कोई को भी समझाओ यह बाप है ना।ऊंच ते ऊंच।ब्रह्मा, विष्णु शंकर से भी ऊंच।वर्सा भी उन से मिलता हैं।ब्रह्मा, विष्णु शंकर से नहीं।देवताओं से ऊंच हैं बाप।ब्रह्मा का किसको भी पता नहीं हैं।गाते भी हैं आदी देव और आदी देवी।परन्तु अर्थ का किसको भी पता नहीं हैं।बाप तुम बच्चों को सब कुछ बैठ समझाते हैं।इसमें कोई भी संशय न लाना हैं।समझानी तो बड़ी किलियर दी जाती हैं।पतित पावन तो बाप ही हैं।उनको सिखलाना पड़ता हैं तुम पावन कैसे बनेंगे।गुरू लोग कहते हैं गंगा नदी पतित पावनी हैं।तो खुद गुरु तो पतितपावन नहीं ठहरे ना।फिर अपन को गुरू हो क्यों कहते।तुम बोल सकते हो तुम कहते हैं मैं गुरू हूं फिर कहते हो पतित पावनी नदी हैं तो वह सबकी गुरू हुई ना।तुम्हारा भी गुरू वह हो गये। क्योंकि तुम भी जाते हो पाप धोने। फिर तुम गुरू क्यों बने हो।क्या तुम ले जाते हो। इसलिए गुरू हो? परन्तु बात करने कर बड़ी हिम्मत चाहिए।उन में क्रोध भी बहुत होता है।झट बिगर पड़ते हैं। तुम बच्चों को खड़ा होना चाहिए।यहां आते हैं हम फरिश्ते होने।कोई भी हंगामा नहीं।बच्चे भी साथ में होंगे तो रग जावेगी। बाप कहते हैं देह सहित देह के सर्व संबंधों को छोड़ो। एक बाप को याद करो।यह देह के सम्बन्धी बच्चे आद तो सब खतम हो जाने हैं।अपन को आत्मा समझो।एक में मोह रखो। परन्तु फिर कहां लाचारी भी हो जाते है।बच्चों को कहां छोड़ कर आवे।यूं तो प्रबन्ध हो सकता हैं। परन्तु कर्म बन्धन है जो खैंचता हैं। तुम कहते भी हो हम जाते हैं शिव बाप दादा पास।यह सिखन माते है कि हम नष्टोमोहा कैसे बने।बाप कहते हैं बच्चे देही अभिमनी हो बैठो।अपन को आत्मा समझो।देह से अलग हो, मर कर बैठो।अर्थात देही अभिमानी हो बैठो।आत्माओं को बाप बैठ पढ़ाते हैं। देह का जो भी बन्धन हैं उन से बुद्धि का योग तोड़ो।तुमको ज्ञान हैं इन आंखों से जो कुछ देखा जाता हैं यह सब विनाश हो जावेगा। हम आत्माओं को अब घर जाना हैं।बाप कहते हैं मीठे बच्चों यह पुरानी दुनिया पुराने देह छी2सम्बंधी अब छोड़ना हैं। एक बाप को ह याद करो।अब जाना है स्वीट होम।मनुष्य मुक्ति में जाने लिए कितना माथा मारते हैं।परन्तु वह सब हैं भक्ति मार्ग।ऐसे और कोई समझा न सके।तुम बच्चे अब समझते हो हम आत्मा स्वीट होम में रहने वाले हैं। यहां आते हो है पार्ट बजाने।सुख का फिर दुःख का पार्ट बजाना हैं।अब फिर बाप आया हैं, कहते हैं अब तुम्हारा सुख का पार्ट चलने वाला हैं।तुम चक्र कैसे लगाते हो वह भी सुनाते हैं।इस शरीर से ही पार्ट बजाते हो।घड़ी2 सुबह हो उठ कर यह ख्याल करो।बाबा तुम बच्चों को सुनाते हैं मैं ऐसे करता हूं।शिव बाबा तो ऐसे नहीं कहेंगे।यह कहते हैं मैं ऐसे करता हूं।वह तुमको भी समझाता हूं।अपन को आत्मा समझ पुरानी दुनिया को छोड़ दो। उस में तो बहुत संबंधो से कनेक्शन होता हैं।यहां तो हैं ही बाप दादा।भाई-बहन।बस।इसलिए गायन भी हैं मधुबन मे मुरली बाजे।मुरली तो जरूर मधुबन में हो बजावेंगे।यहां हो आना पड़ेगा।वह भी समय आवेगा फिर तुम्हारे मे बहुत कशिश रहेगी।आत्मा जितना पवित्र होंगी कशिश होंगी।प्या आत्मा हैं, फिर झट उड़ने लग जाती हैं।सन्यासियों कशिश थोड़े ही होती हैं।उनको भी पता नहीं पड़ता हैं।

हम जावेंगे कैसे। वह तो बिलकुल ही प्युर हुई है। सोया भी नहीं। एकदम छोटी बिन्दी है। एवरप्युर है। बाकि जो भी आत्माएं हैं उनको जंक लगी हुई है। समझानी कितनी मिलती है। उनको कहा जाता है अनादी बनी बनाई मुर्त। बाप में कितनी कशिश रहती है। सब उनको याद करते हैं। हे भगवान। लिंग बनाये रख देते हैं। समझते कुछ भी नहीं। आत्माएं कितना याद करती हैं। सतयुग त्रेता में याद नहीं करते। वहां तुमको इतनी कशिश नहीं होती है वापस जाने की। क्योंकि हो ही सतोप्रधान। जब कट चढ़ती है तो दुःख में याद करते हैं। बाबा आकर हम को पावन बनाओ। तुम अब प्युर बन रहे हो। वह तो एवरप्युर ही है। तुम जानते हो हमरी आत्मा भी प्युर थी। हम स्वर्ग के मालिक थे। फिर इमप्युर बनने से दुःख उठाते हैं। इतनी छोटी सी आत्मा शरीर साथ कितना पार्ट बजाती है। अब उन पर कट चढ़ी है। वह उतरे कैसे। बाप आकर सहज युक्ति बताते है। यह बहुत सूक्ष्म बात है। जितना बाप को याद करेंगे तो जंक निकल जावेगी। बाप कहते हैं बुधि में जो भी शास्त्रों को भुसा भरा हुआ है वह सब निकालो। गुरुओं के मंत्र आद सब छोड़ो। इन गुरुओं को भी मारो गोली। बाप किसको कहते है, आत्माओं को समझाते हैं। आत्मा कितनी छोटी बिन्दी है। आत्मा प्युर है तो सतयुग त्रेता में रहती है। वहां कोई को भी इमप्युर आत्मा रह न सके। बाप कहते है इस संगम पर ही आकर हम सबको प्युर बनाते हैं। प्युर बने तब ही मुक्ति जीवन मुक्ति का लायक बने। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समय जब आवेगा शरीर छोड़ने का तो फिर वह वायुमण्डल भी तुम देखेंगे। अभी विनाश हुआ कि हुआ। नेचरल कैलेमिटिज का भी तुम साक्षात्कार करते रहेंगे। कैसे अर्थक्वैक आद होती है। यह सब तुम अखार देखते रहेंगे। रिहलसल होती रहेगी। तुम हो गुप्त सेना। और तुम सारे विश्व के मालिक बनने वाले हो। बाप तुमको युक्ति बताते हैं। माया पर जीत पाने की। तुम जानते हो शिव बाबा है रचता।, सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, रचना के आद, मध्य, अन्त को तुम ही जानते है। और कोई नहीं जानते। तुमको नालेज भी चाहिए। प्युर भी बनना है। प्युर बन कर फिर स्वर्ग में जाये कर राज्य भी करेंगे। इसकेलिए वर्ल्ड को हिस्ट्री जागरफी बाप समझाये रहे हैं। यह है वेहद की बात। सतयुग के यह ल० ना० वेहद के मालिक थे ना। सतयुग में इन्हों का ही आदी सनातन देवी देवता धर्म था। तुम जानते हो 5000 वर्ष पहले देवी-देवताओं का राज्य था। 2500 वर्ष तक इन्हों को राजाई थी। बाकि आधा में और2 आते है। तुम्हारी उतरती कला होती है। अभी तुम चढ़ती कला में हैं। अभी ही तुम उतरती कला और चढ़ती कला को जानते हो। तुम लिखते भी हो भारतवासियों की उतरती कला और चढ़ती कला। अभी तुम मनुष्य से देवता बनते हो। तुम्हारी है चढ़ती कला। फिर 84 का चक्र जरूर लगाना है। चढ़ती कला से उतरती कला होती है। सीढ़ी कितनी अच्छी है। इनको अच्छी रीत समझ जावेंगे तो फिर चढ़ती कला के लिए जरूर पुरुषार्थ करेंगे। आत्माएं प्युर बन फिर भाग जावेंगी। इसलिए गाया जाता है सेकन्ड में जीवन मुक्ति। बाप को बच्चा हुआ और वारस बना। यहां भी शिव बाबा को जाना और स्वर्ग के मालिक बना। बाकि मैनरस भी अच्छी चाहिए। इस समय मनुष्यों को क्वालिफिकेशन अच्छा नहीं है। तुम जानते हो अपन को आत्मा समझ बाप को याद करने से वह क्वालिफिकेशन बदल जावेगी। देवताओं के दैवी क्वालिफिकेशन का गायन करते हैं। यह सर्व गुण सम्पन्न.... है। भारत का प्राचीन क्वालिफिकेशन देखो कैसे थी। अभी क्या है। बाप आते है फिर से क्वालिफिकेशन प्राप्त कराने। और धर्म वाले तो क्वालिफिकेशन से समझ न सके। भारतवासियों की ही क्वालिफिकेशन थी। आदी सनातन देवी देवता धर्म का हो तब इन बातों को समझ सके। कौआ मिसल कां कां करते है। अर्थ कुछ भी नहीं समझते। अभी बाप तुम्हारी बुधि में सारी नालेज देते है। बार2 समझाते हैं याद की यात्रा पर पुरा अटेन्शन देना है। याद में रहने से कब भी तुम्हारे से उल्टा कर्म होगा नहीं। ला ऐसे कहते हैं। अपन को अशरीरी समझते हो फिर उल्टा काम किस से करेंगे। अशरीरी होने से उल्टा काम होगा ही नहीं। बाप को याद करने से विकर्म भी विनाश होंगे। युक्तियां तो बहुत समझाते रहते है। टाइम भी बच्चों को

बहुत मिलता है। अपन को आत्मा समझ बाप की याद में रहने की युक्ति बतलाते रहते हैं। सबेरे उठ कर बाप को याद में बैठ जाओ। मनुष्य तो सबेरे उठ भक्ति करते हैं। मंदिर में जावेंगे माथा टेकेंगे। हाथ जोड़ेंगे। जहां मंदिर देखा सर जरूर नीचा करेंगे। वह सब है भक्ति मार्ग। घड़ी2 माथा टेकते रहते। बाप कहते हैं तुम बच्चे हो। बाप बैठ तुमको पढ़ाते हैं। भक्ति मार्ग की रसम भी खतम करते हैं। बाप कहते हैं मैं तो सर्वेन्ट हूं। मुझे हो तुम बच्चों के आगे नमस्ते करनी पड़े। बाप कहते हैं मैं तुमको अपना से भी बड़ा बनाता हूं। कहेंगे यह तो वन्डर है ना। सन्यासियों के मुख से कब नमस्ते नहीं निकलेंगे। वह तो अपन को बहुत बड़ा समझते हैं। यहां बाप अर्थ सहत समझाते हैं। गायन भी है परम पिता परमात्मा निराकार निरअहंकारी हैं। वह जब आये शरीर में बैठे तब तो अपना परिचय देवे। अभी तुम प्रेक्टीकल में देखते हो। बाप कैसे बैठ कर हम आत्माओं को पढ़ाते हैं। तो धारणा करनी चाहिए। यहां तुम सब हो बाप के बच्चे। बाप कहते हैं बच्चों को हाथ जोड़ने की दरकार नहीं। घर में हाथ जोड़ते हैं क्या। तुम तो बच्चे खेलो कुदो। बाप को जितना याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगा। यह बहुत सहज भी है, तो बहुत डिफिकल्ट भी है। इसमें ही युद्ध चलती है। 84 के चक्र की कहानी को भी समझाना तो बहुत सहज है। इसमें माया कुछ नहीं करती। पट से बुद्धि में बैठ जाता है। बाकि कहते हैं बाबा आप की याद घड़ी2 भूल जाते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं योग अक्षर में मुंझो मत। यह तो याद बहुत सहज है। भक्ति मार्ग में भी कहते हैं हे शिव बाबा, ओ भगवान। यह कौन याद करता है। आत्मा। आत्मा का शारीरीक बाप तो है। फिर शिव बाबा को याद क्यों करती है। वह फिर कौन सा बाप है? समझाते हैं क्योंकर हम आत्माओं का बाप तो वह है। वह है बेहद का बाप। तो जरूर वर्सा भी बेहद का देता होंगा। बाप कहते हैं मैं हर 5000 वर्ष आता हूं। बाप कितना अच्छी रीत बैठ समझाते हैं। मीठे बच्चे आगे भी तुम बाबा बाबा कहते थे। अब बाप तुमको प्रेक्टिकल में तुमको मिला है। तुमको बाप ऐसा सर्वगुण सम्पन्न... बनाते हैं। जरूर बाप ने हो यह गुण भरी होंगी। बाप में ही अगर कोई अवगुण है तो बच्चों को भी ऐसा सिखलाते हैं। खुद भी विकारी हैं तो बच्चों को भी काम कटारी चलाना सिखलाते हैं। वह रसम रिवाज रावण राज्य की अब बन्द होती है। अब तो राम राज्य स्थापन होता है। लोकलाज कुल की मर्यादा अब खतम होनी हैं। चित्रों में कितना क्लियर दिखाया हैं। सतयुग दिन, कलयुग रात। कितना फर्क है। वह सुख, वह दुःख। अभी यह है तुम्हारा पुरुषोतम संगम युग। वहां तमोप्रधान, वहां हो सतोप्रधान। तो संगम युग पुरुषोतम हुआ ना। इन बातो को समझेंगे भी वही जिन्हो ने कल्प पहले भी समझा हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार देवताओं का अब सेपलिंग लग रही हैं। गवर्मेन्ट झाड़ों का सेपलिंग लगाते हैं। बाप भी आकर फूलों का सेपलिंग लगाते हैं। यह भी सेपलिंग लगाने का फैशन अभी ही निकला हैं। यहां मनुष्यों को कांटे से फूल बनने का उत्सव हैं मनाते हैं। वह सब मेले लगते हैं कोई मेला महिना, 2/महिना फिर मेला तो है ही हैं। बाप बच्चों से मिलते हो रहते हैं। उन मेले में तो मैले बनते हैं। यहां तुम उज्वल बनते हो। इन देवताओं जैसे और फिर विश्व का मालिक भी बनते हो। अभी तुम समझते हो आखीर वह दिन आया आज। हम फिर से बाप से वर्सा लेने आये हैं। बाप राजयोग सिखाय रहे हैं। ऊंच ते ऊंच बाप ही आये सबा को पूज्य बनाते हैं। शंकराचार्य भी देखो पुजारी है ना। तुम अखबार में भी डाल सकते हो। पुजारी फिर अपन को पूज्य कैसे कह सकते। बाबा ने समझाया है तुम स्टैम्स भी बनाओ। उस पर समझाना है। तुम विकारी भ्रष्टाचारियों के स्टैम्स निकालते रहते हो। यह बेहद का बाप कहां गया। इनको तो फिर त्रिमूर्ति का निकालना पड़े। बाप बिगर त्रिमूर्ति किस काम का। समझाने में बड़ी मेहनत लगती है। अच्छे बच्चों को गुड मार्निंग। ओम।

डैरेक्शन :- गीता सप्ताह लिए जो प्रोग्राम लिखा गया था नवम्बर मास में मनाने का, सो अब फिर त्रिमूर्ति *******शिव जयन्ती के समय गीता सप्ताह मनाना है। ओम।

नोट :- जबलपुर सेन्टर का टेलिफोन नम्बर :- 2107 ओम।